।। न्यात का संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ न्यात का संवाद ||

|| अरेंल ||

संत सुखरामजी ने न्यांत मे ब्राम्हणा केवा मेल्यो,
तुम सुदर कू अग्या देते हो, सोयीको जाब
देणो पड़सी || तब संत सुखरामजी बोलीया ||

आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज से जातीवाले गुजर गोड ब्राम्हीण के द्वारा समाचार भेजे की आप शुद्र को भक्ति देते हो तो शुद्र को भक्ति देना यह गुन्हा है व इस गुन्हा का जबाब हम जातवालोको तुम्हे देना पडेगा ।

पांच तत्त का जीव सरब ही होय रे । अे चार बरण नर नार माँड सब लोय रे ।।
सुण याँ मे कहो कुण नीच मान म्हे लेव सूं । हर हाँ ताँकूं के सुखराम अग्या नही देव सूं ।१।

तब आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज ने उस जातीवाले ब्राम्हीण से कहाँ की चारो वर्ण के ब्राम्हण से लेकर शुद्र तक के सभी नर नारी आकाश,वायु.अग्नी,जल,पृथ्वी इन पाँच तत्वो के है। इन जीवोमे निच कौन है व उच कौन है यह मुझे सतज्ञानसे समजावो । सतज्ञान मे जो निच दिखेगा उसे मै आज्ञा नही दुंगा ।।।१।।

तुम मुज कूं कहो बिचार नीच अे होय रे । सो ताकूं संगत माँय रखुं नही कोय रे ।
अर नहि तर झूटो बाद करो सो बावळा । हर हाँ अंत काळ के माय गुन्ही व्हे रावळा ।२।

तुम मूझे विचार करके निच कौन है यह बताओ । उनको मै मेरे संगत मे आने नही दुंगा । अगर वह निच नही निकले तो बहके हुये पगलो मेरे साथ झुटा विवाद क्यो करते हो । ऐसा बावलापण करोगे तो अंतकालमे रामजीके गुन्हेगार होगे ।।।२।।

मही नीच कन अप तेज कन बाय रे । कन ब्रहमंड कहीये नीच बतावो आय रे ।।
सुण सब शास्त्र जोय खोजना कीजिये । हर हाँ यांको के सुखराम जाब मुज दीजिये ।३।

ये सभी देह पाँच तत्वो के है। इन पाँच तत्वो मे पृथ्वी निच है,की पानी निच है,की अग्नी निच है,की वायु निच है,की आकाश निच है,यह सतज्ञानसे समजावो। तुम सभी वेद, शास्त्र,पुराण देखकर पाँच तत्वो मे से कौन निच है इसकी खोज करो व मुझे जबाब दो ऐसा आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज जातीवाले ब्राम्हीण को बोले ।।।३।।

अे पांचुँ तो ऊँच नीच भी नाय हे ।।ओ ऊदबुद बणीयो खेल ।।
कहयो नही जाय हे ।। पिण क्रणी कहीये नीच नीच सो धांम रे ।।
हर हाँ सो आद अंत सुखराम बणायो राम रे ।।४।।

सतज्ञानसे ये पाँचो तत्व ऊँचे भी नही व नीच भी नही है। ऐसा यह रामजी का खेल अदभुत है। इस अदभुत खेल का कुछ वर्णन नही करते आता। यह जीवोके करणीयोका खेल है। पिछ्ले जन्ममे उंच करणी की वह उंच घरमे आया व उसके घर भी उंचे जगह है व निच करणी की वह निच घरमे आया व उसका घर भी निच जगह है। निच करणी

वालोको निच घरमे व उंच करणी वालोका उंच घरमे भेजनेका काम आद से अंत रामजी ही करते आये है । ऐसे रामजीका जीन्हे तुम शुद्र कहते हो वे भजन करते है ऐसा आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।।४।।

करणी नांव समान नही हे काय रे ।। भक्त सरोभर धाम नही जग माय रे ।।
अब काढो यामे बाँक मधम कोई कीजिये । हर हाँ सुणज्यो के सुखराम जाब मोय दीजिये ।५।

तो राम नामका स्मरण करना,ऐसी,उत्तम करणी दूसरी कोई भी नही है। राम नाम से, कोली से वाल्मिक ऋषी बन गया,राम नाम से प्रल्हाद बचा लिया गया। राम नाम से, महादेव को विषबाधा नही हुयी। राम नाम से,शेषनाग ने सारी पृथ्वी उठाई,राम नाम से, वेश्या का उद्धार हुआ,ऐसे अनेक उदाहरण है,राम नाम से,नीच जाती के होकर भी,ऊँचे हो गये तो राम का नाम लेने जैसी,करणी दूसरी कोई भी नही है। वैसे ही भक्त की बराबरी का,दूसरा कोई भी धाम याने तिर्थ संसार मे नही है। कारण अड़सठ तीर्थ,संतो की चरणों में निवास करते है। और संतो के चरणों की आशा करते है तो भक्त जैसा धाम,संसार में दूसरा कोई भी नही है। जिस स्थान पर,राम नाम लेने वाले संत हो गये, उस स्थान को महादेव बैलपर से उतरकर अपना मस्तक झुकाता है इतना गुण जिस जगह को आ जाता है फिर संतो के गुण का क्या कहना। ऐसा राम का नाम लेने में,क्या टेढ़ापन है,वह मुझे बताओ?आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,सभी जन सुनो और इसका मुझे जवाब दो ।।५।।

न्यात वाळो व्यासो वोच यामे ओ सुण चूक पेल सो करम कमाया ।।
शुद्र के घर जनम दाव माटी मद खाया । अब ही प्रणे शुद्र के अन वांरे ही खाय ।
हर हाँ इण कारण सुखराम नीच क्राया जाय ।।६।।

आदी सतगुरू सुखरामजी महाराजके जातवाला गुनारड्या ब्यास गुरु महाराजसे बोला की तुम्हारे संगत मे आनेवाले इन शुद्रो की यह चुक है की इन्होने पुर्व जन्म मे निच कर्म किये । इन निच कर्माके कारण ये शुद्र के घरमे जन्मे व वहाँ मास माटी खा रहे व शराब पी रहे । शुद्र होने कारण इनका शुद्र के घरमे ही विवाह होता व वही पे भी शुद्र ही खाना पिना रहता इस कारण इन लोगोको निच जातीके लोग कहते है ऐसा वह ब्यास आदी सतगुरू सुखरामजी महाराजसे बोला ।।।६।।

यामे ओ गण अेहे शुद्र घर आविया ।। मद माटी अर गाय ब्होत बाँ खावियाँ ।।
अर अब ही परणे जोय नीच के जाय रे ।। हर हाँअे लछण सुखराम नीच के माय रे ।।७।।

आपके संगत मे आनेवाले जीवोका यह अवगुण है की वे शुद्र घरमे जन्मे जीस घरमे सभी लोक दारु पिते,मांस खाते व मरी हुयी गाय खाते। अभी भी ये जहाँ मांस,मदिरा व मरी हुयी गाय का खाना है ऐसे ही घरके लड्की से विवाह करते है। इन निच लक्षनोके कारण इनकी जात निच है ऐसा ब्यास आदी सतगुरू सुखरामजी महाराजसे बोला ।।।७।।

सुखरामजी वाच ।।

ब्राम्हण करम कमाय नीच जो थाय हे । तो शुद्र भजन प्रताप ऊँच होय जाय हे।
अर यूं रिख के घर जीम ऊत्तम नही कोय रे ।।
हर हाँ तो अेसे ही सुखराम नीच नही होय रे ।।८।।

आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,अरे ब्राम्हण,ब्राम्हण के घर जन्म लेकर, नीच कर्म करने लगा,तो वह ब्राम्हण भी,नीच जाती के श्रेणी का हो जाता है। और शुद्र भी भजन करके भजनके प्रतापसे ऊँची श्रेणी का हो जाता है। मातंग ऋषी,जाती के शुद्र थे,परन्तु वह भजन करके,ऋषी हो गये । चोखामेला शुद्र था,सजन,यह कसाई था । ऐसी-ऐसी नीच जाती के,भजन के प्रताप से,ऊँचे हो गये । रोहिदास,यह जाती से शुद्र था,शबरी यह भीलनी थी। इस तरह से,ऐसे-ऐसे भजन के प्रताप से,बहुत से ऊँचे हो गये,इस तरह ब्राम्हणो के वंश मे,नीच कर्म करके,रावण,कुंभकर्ण ये ब्राम्हण के घर जन्म लेकर,नीच कर्म करके,राक्षस हो गये। तो कोई भी ऊँची जातीके,ऋषी याने ब्राम्हण के घर भोजन करनेवाला,ऊँचा नही होता है फिर नीच के घर खाने से,नीच कैसे होगा?(ऊँचे घर खानेसे,ऊँचा होते होंगे,तो नीचके घर खानेसे,नीच होगा। आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,इस तरह से ऊँचे के घर खाने से,ऊँच होता नही है,तो नीच के घर खाने से,नीच भी नही होता है। ।। ८ ।।

ब्राम्हण देहे कन जीव जाब ओ दीजिये । रे पीछे सोच बिचार बाद सो कीजिये।
सुण थाँरे उत्तम कोण देहे घट माय रे ।। हर हाँ बूझे यूं सुखराम बतावो आय रे ।।९।।

अरे,ये ब्राम्हण देह या जीव है। इसका मुझे जवाब दो। फिर बाद मे समझकर,विचार करके,मुझसे विवाद करो। सुनो,इस तुम्हारे शरीर घर मे,उत्तम कौन है यह मुझे बतावो ऐसा आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज जातवाले ब्राम्हण से बोले । ।। ९ ।।

ब्राम्हण देहे नही जीव नही घट कोय रे । आ बचना की मरजाद बिराम्हण होय रे ।
यां तीना बांधी मेर आद ठेराविया ।। हर हाँ यूं ब्राम्हण सुखराम जुगे जुग गाविया ।।१०।।

यह देह भी ब्राम्हण नही है। और ब्राम्हण का घर,यह भी कोई ब्राम्हण नही है । यह वचन से बांधी हुयी मर्यादा है,ऐसे ये वचन की बांधी गयी मर्यादा से,ब्राम्हण होते है। ब्रम्हा, विष्णू,महादेव इन तीनों ने यह मेर बांध कर,ब्राम्हण को आदी का ठहराया है इस तरह से ये ब्राम्हण,युग-युग से कहलाते है । ।। १० ।।

अे तो जात न पांत भक्त बी नाय हे ।। अे क्रणी करतूत असुभ नही क्राय हे ।।
यां को करो बिचार तत्त सो छाणिये । हर हाँ ओ ऊँच नीच सुखराम कोण कूँ जाणिये ।११।

ये पांचो तत्वकी कोई जाती नही और कोई पाती नही है। और ये पांचो तत्व भक्त भी नही,तथा इसकी करणी और करतूत,अशुभ भी नही है। इसका विचार करके,इन पांच तत्वोका निर्णय करो । इसमें पाँच तत्वो में,ऊँच और नीच किसे जाने ? अगर इन पाँच

तत्वोमे ऊँच व नीच नही है तो,ये पाँच तत्वके बने हुये सभी ऊँच और नीच कोई नही है । ।। ११ ।।

ऊँच नीच हे केण ओर कुछ नाय रे।सुण सुख दु:ख करणी लार भुगत्ते जाय रे ।
सब जाताँ ब्होहार बरण सब पेक हे । हर हाँ सब केबत सुखराम मूळ धूर अेक हे ।।१२।।

यह देह ऊँच और नीच केवल कहने के लिए है । और कुछ भी नही है । और यह जीव, सुख–दु:ख,अपनी करणी के प्रमाण से,(अच्छे कर्मो का सुख और बुरे कर्मो का दु:ख,जहाँ जाता है, वहाँ अपनी–अपनी करणी के प्रमाण से,सुख और दु:ख भोगता है ।)सभी जातीयों मे,व्यवहार में, सभी वर्णो में और सब जगह देख लो । सभी ही सुख–दु:ख भोगते रहते है।(ऊँचे वर्ण के भी,कितनी ही बार,दु:खी हो जाते है। और नीचे वर्ण की जाती में भी,सुख आ जाता है। सुख और दु:ख अपनी करणी के प्रमाण से,सभी ऊँच और नीच,जाती में देख लो,है या नही । आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है ,कि,यह ऊँच और नीच जाती की,केवल कहने की बात है । सभी वर्णो का मूल घर,मतलब सर्व प्रथम आदी घर तो एक ही है । ।। १२ ।।

आ ऊँच नीच की केण झूट नही कोय रे । सोयाँ आपस के बीच बंधी हे जोय रे ।
तीन लोक लग सुभ असुभ सत्त जाणिये । हर हाँ चोथे मे सुखराम अेक कर ठाणिये ।१३।

यह ऊँच और नीच की कहने की बात कोई झुठी नही है। जो इन्होने आपस मे,मेर मर्यादा डालकर,बांध दी है। तो यह मर्यादा,तीनो लोक तक,शुभ(अच्छी)और अशुभ(बुरी)है यह सत्य है,ऐसा समझो परन्तु हमारे चौथे लोक में,ये सभी एक हो जाते है। चौथे पद मे चले जाने पर,वहाँ ऊँच और नीच,अच्छा और बुरा,इसका भेद भाव मिटकर,चौथे पद में जाने वाले,वहाँ चौथे पद में,सभी एक हो जाते है। ऐसे आदी सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।१३।।

।। इति न्यात को संवाद संपूरण ।।